# हिन्दी आलोचना (डॉ० नन्द दुलारे वाजपेयी)

छायावादी काव्यधारा को प्रतिष्ठित एवं शीर्ष तक पहुँचाने वाले समीक्षक डॉ० नन्ददुलारे वाजपेयी का स्थान हिन्दी आलोचना के साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इनकी आलोचनात्मक विशेषता निम्न हैं।

1. छायावाद पर बल
2. समन्वयवादी विचारधारा
3. लोककल्याण की भावना
4. सांस्कृतिक चेतना पर बल
5. सौन्दर्यानुभूति काव्य पर बल
6. सौष्ठववादी कवि
7. रसवादी दृष्टि
8. प्रेम जीवन के लिए

नंददुलारे वाजपेयी की आलोचनात्मक कृति निम्न है

1. हिन्दी साहित्य
2. बीसवीं शताब्दी
3. महाकवि सूरदास
4. जयशंकर प्रसाद
5. निराला एवं नया साहित्य
6. आधुनिक साहित्य
7. प्रेमचंद

प्रताप कुमार

उपर्युक्त रचनाओं में नन्ददुलारे वाजपेयी जी छायावादी काव्य धाराओं के महत्व देते हुए जीवन के तमाम गुणों अवगुणों को उजागर करने का काम किये हैं इस कह सकते हैं कि ये काव्य में सुन्दरता को स्वीकारते हैं, सुन्दरता का अभिप्राय सभी गुणों से परिपूर्ण काव्य है।